

[2023] 10 एस. सी. आर 724:2023 आई. एन. एस. सी. 610

/

[2023] 10 एस सी आर।

/

अरुण देव उपाध्याय

बनाम

एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर. (आर. पी. (ग) संख्या 1273-1274/202)

/

में

(2018 का सी. ए. संख्या 8345-8346)

05 जुलाई, 2023

[बी. आर. गवई और विक्रम नाथ, जे. जे.]

/

सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908-या। XLVII,आर. 1-समीक्षा याचिकाकर्ता द्वारा दायर दीवानी अपीलों को निर्णय डी. टी. डी. के माध्यम से खारिज कर दिया गया।10.08.2021 अन्य बातों के साथ-साथ यह अभिनिर्धारित करना कि विदेशी अधिनिर्णय को मध्यस्थता समझौते के गैर-हस्ताक्षरकर्ताओं के खिलाफ लागू किया जा सकता है और यह कि एकमात्र आधार जिस पर इसके प्रवर्तन का विरोध किया जा सकता है या अस्वीकार किया जा सकता है, एस में निहित हैं। 48, मध्यस्थता और सुलह अधिनियम-इसने यह भी माना कि एस का कैनवास।46 एस की तुलना में व्यापक है।35 और उन सभी व्यक्तियों पर लागू होगा जो मध्यस्थता समझौते के पक्षकार भी नहीं हैं-इसने आगे कहा कि यातनापूर्ण विवाद को मध्यस्थता के लिए भी संदर्भित किया जा सकता है-समीक्षा की मांग की गई-आयोजित:समीक्षा करने की शक्ति का उपयोग अपीलीय शक्ति के रूप में नहीं किया जा सकता है और इसे सख्ती से या के दायरे और दायरे तक ही सीमित रखना होगा। XLVII,आर. 1, सी. पी. सी.-रिकॉर्ड के सामने एक त्रुटि ऐसी त्रुटि होनी चाहिए जो केवल रिकॉर्ड को देखने से प्रभावित हो और इसके लिए उन बिंदुओं पर तर्क की किसी लंबी प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए जहां दो राय हो सकती हैं-वर्तमान मामले में, समीक्षा याचिकाओं में 18 आधार उठाए गए थे-समीक्षा में लिए गए सभी आधारों पर निर्णय में विस्तार से चर्चा की गई थी।10.08.2021 और निष्कर्षों को समीक्षा याचिकाकर्ता के दावे को स्वीकार किए बिना वापस कर दिया गया-निर्णय में प्रत्येक तर्क पर विचार किए जाने के बाद,

यदि आगे दिए गए तर्कों को स्वीकार कर लिया जाता है, तो इसके परिणामस्वरूप उठाए गए और तय किए गए बिंदुओं पर एक अलग राय व्यक्त की जाएगी, जो या की तय की गई रूपरेखा के भीतर नहीं आती है। XLVII, आर. 1 रिकॉर्ड के सामने स्पष्ट त्रुटि से संबंधित सी. पी. सी.-समीक्षा याचिकाओं की अनुमति देने के लिए कोई आधार नहीं-भारत का संविधान-अनुच्छेद 137, 145-सर्वोच्च न्यायालय नियम, 2013-या। XLVII-मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996-ss.35, 44-49.

/

/

/

/

/

724 ए.

725

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर.

पुनर्विचार याचिकाओं को खारिज करते हुए न्यायालय ने

1.1 समीक्षा करने की शक्ति का उपयोग अपीलीय शक्ति के रूप में नहीं किया जा सकता है और इसे आदेश **XLVII** नियम **1** सी. पी. सी. के दायरे और दायरे तक सख्ती से सीमित करना होगा। रिकॉर्ड के सामने एक त्रुटि ऐसी त्रुटि होनी चाहिए जो केवल रिकॉर्ड को देखने से प्रभावित हो और इसके लिए उन बिंदुओं पर तर्क की किसी भी लंबी प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए जहां दो राय हो सकती हैं।[पैरा **15**] [**738-एफ**]

/

1.2 पुनर्विचार याचिकाओं में **18** आधार उठाए गए हैं।आई. डी. **1** दिनांकित निर्णय का बारीकी से अवलोकन दर्शाता है कि समीक्षा में लिए गए सभी आधारों पर विस्तार से चर्चा की गई है और समीक्षा याचिकाकर्ता के दावे को स्वीकार नहीं करते हुए निष्कर्ष वापस किए गए हैं। जिस बात का तर्क दिया जाना चाहिए वह मूल रूप से यह है कि लिया गया दृष्टिकोण गलत है और इसलिए, आक्षेपित निर्णय की समीक्षा की जानी चाहिए।निर्णय का अनुच्छेद **29** अधिनियम की धारा **44** के विश्लेषण और व्याख्या से संबंधित है। इस न्यायालय ने देखा कि मध्यस्थता पुरस्कार को विदेशी पुरस्कार के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए छह तत्व होंगे। [पारस **17** और **19**] [**739-ए-बी, जी**]

/

/

1.3 पैराग्राफ संख्या **30** से **33** में, इस न्यायालय ने सामग्री पर चर्चा की। इसके अलावा, पैराग्राफ **34** से **37** में, न्यायालय ने अधिनियम की धारा **47** के दायरे पर विचार किया और समीक्षा याचिकाकर्ता के वकील के इस तर्क को खारिज कर दिया कि साक्ष्य प्रस्तुत किया जाना चाहिए और यह साबित करने के लिए एक पूर्ण परीक्षण होना चाहिए कि गैर-हस्ताक्षरकर्ता भी एक विदेशी पुरस्कार से बंधा होगा। पैराग्राफ **48** से **57** में, इस न्यायालय ने इस तर्क पर विस्तार से विचार किया कि पुरस्कार के गुण-दोष पर समीक्षा अधिनियम की धारा **48 (1)** के अंतर्गत अनुज्ञेय होगी और समीक्षा याचिकाकर्ता के खिलाफ अभिनिर्धारित किया क्योंकि उसमें से कोई भी आधार समीक्षा याचिकाकर्ता के लिए उपलब्ध नहीं था। रिपोर्ट के पैराग्राफ संख्या **66** से **70** में, इस न्यायालय ने इस तर्क पर विचार किया कि अपकृत्य में दिए गए नुकसान मध्यस्थता समझौते के दायरे से बाहर होंगे और उक्त तर्क को खारिज कर दिया। [पारस **20-22**] [740-D-F]

/

/

/

1.4 निर्णय की रिपोर्ट के पैराग्राफ **71** में, इस न्यायालय ने अधिनियम की धारा **35** और **46** के दायरे की तुलना की और आगे कहा कि एक बार पुरस्कार को उस राज्य में चुनौती नहीं दी गई थी जहां इसे बनाया गया था, यह नहीं कहा जा सकता है कि मध्यस्थता पुरस्कार था

/

726 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 10 एस. सी. आर.

/

समझौते के मूल विधि का उल्लंघन किया। रिपोर्ट के पैराग्राफ **72** और **73** में किसी भी सार्वजनिक नीति के उल्लंघन के मुद्दे पर चर्चा की गई और इस न्यायालय ने पाया कि ऐसा कोई उल्लंघन नहीं था। [पारस **23,24**] [740-जी-एच]

1.5 पैराग्राफ **74** से **76** में, इस न्यायालय ने नुकसान की मात्रा और उसे निर्धारित करने के लिए आधार को उचित ठहराया, भले ही वह सर्वोत्तम निर्णय मूल्यांकन पर आधारित हो। इस न्यायालय द्वारा अपने दिनांकित निर्णय में प्रत्येक तर्क पर विचार किए जाने के बाद, यदि आगे दी गई दलीलों को स्वीकार कर लिया जाता है, तो उनके परिणामस्वरूप उठाए गए और तय किए गए बिंदुओं पर एक अलग राय व्यक्त की जाएगी, जो रिकॉर्ड पर स्पष्ट त्रुटि से संबंधित

आदेश **XLVII** नियम **1** सी. पी. सी. के तय किए गए रूपों के भीतर नहीं आते हैं।समीक्षा शक्ति का उपयोग करने के अन्य आधार न तो मौजूद हैं और न ही वर्तमान याचिकाओं में उठाए गए हैं।पुनरीक्षण याचिकाओं को अनुमति देने के लिए कोई अच्छा आधार नहीं है।[पारस **25-27**] **[741-A-C]**

/

/

सत्यनारायण लक्ष्मीनारायण हेगड़े और अन्य बनाम मिलिकारजुन भवनप्पा तिरुमाले ए. आई. आर. **1960** एस. सी. **137:[1960]** एस. सी. आर. **890**; पेरिसोन देवी बनाम सुमितरी देवी **(1997)**

/

8 एससीसी **715:[1997]** **4** पूरक।एस. सी. आर. **470**; एस. मुरली

सुंदरम बनाम जोथीबाई कन्नन और अन्य सिविल अपील

2023 की संख्या **1167-1170** दिनांक **24** फरवरी, **2023**;

पेरी कंसाग्रा बनाम स्मृति मदन कंसाग्रा **(2019) 20** एस. सी. सी. **753**; शांति कंडक्टर (पी) लिमिटेड बनाम।असम एस. ई. बी.

/

(2020) 2 एससीसी **677:[2019]** **16** एस. सी. आर. **252**-निर्भर।

शिवदेव सिंह बनाम पंजाब राज्य ए. आई. आर. **1963** एस. सी. **1909**; अरिबम तुलेश्वर शर्मा बनाम अरिबम पिशक शर्मा ए. आई. आर. **1979** एस. सी. **1047**; मीरा भान्जा (श्रीमती) वी. निर्मला

/

कुमारी चौधरी (श्रीमती) (1995) **1** एस. सी. सी. **170:[1994]**

5 पूरक।एस. सी. आर. **503**; उमा नाथ पांडे बनाम उत्तर प्रदेश राज्य

(2009) 12 एससीसी **40:[2009]** **4** एस. सी. आर. **374**-संदर्भित।संदर्भित निर्णय

/

[1960] एससीआर **890**

पर विश्वास किया

[1997] 4 पूरक।एस. सी. आर. 470 पैरा 11 ए. आई. आर. 1963 एस. सी. 1909 पर निर्भर था जिसे पैरा 12 ए. आई. आर. 1979 एस. सी. 1047 के लिए संदर्भित किया गया है जिसे पैरा 12 ए. के लिए संदर्भित किया गया है।

/

727

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर.

[1994] 5 पूरक।एस. सी. आर. 503 पैरा 12 [2009] 4 एस. सी. आर. 374 पैरा 12 (2019) 20 एस. सी. सी. 753 पैरा 13 [2019] 16 एस. सी. आर. 252 पैरा 14 पर निर्भर था

/

अंतर्निहित न्यायनिर्णय:आर. पी. (ग) 2018 की सिविल अपील Nos.8345-8346 में 2021 का Nos.1273-1274।

भारत के उच्चतम न्यायालय के 2018 के सी. ए. Nos.8345-8346 में दिनांकित 10.08.2021 निर्णय और आदेश से।

हरीश एन. साल्वे, वरिष्ठ अधिवक्ता, अनुराधा दत्त, सुश्री बी. विजयलक्ष्मी मेनन, सुश्री फेरेस्ते डी. सेठना, सुश्री सुमन यादव, सुश्री तृषा रे चौधरी, कौत्सुभ श्रीवास्तव, अधिवक्ता।याचिकाकर्ता के लिए।

/

शेखर नाफड़े, वरिष्ठ अधिवक्ता, गगन सांघी, देवेंद्र वी. चौहान, एम. भरत, सुश्री फराह हाशमी, सुश्री ऐश्वर्या दास, रामेश्वर प्रसाद गोयल, अधिवक्ता।उत्तरदाताओं के लिए।

/

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

विक्रम नाथ, जे।

1. ये अरुण देव उपाध्याय (समीक्षा याचिकाकर्ता) द्वारा दायर समीक्षा याचिकाएं हैं जो 2018 की सिविल अपील संख्या 8345-8346 में पारित दिनांकित 10.08.2021 के निर्णय की समीक्षा के लिए अनुरोध कर रही हैं, जिसका शीर्षक जेमिनी बे ट्रांसक्रिप्शन प्राइवेट लिमिटेड बनाम.इंटीग्रेटेड सेल्स सर्विस लिमिटेड और ए. एन. आर. 1 जिससे पुनरीक्षण याचिकाकर्ता द्वारा दायर उक्त दीवानी अपीलों को खारिज कर दिया गया।2. हमने समीक्षा याचिकाकर्ता के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरीश एन. साल्वे और प्रतिवादी संख्या 1 के विद्वान वरिष्ठ वकील श्री शेखर

नाफडे को सुना है और रिकॉर्ड पर सामग्री का भी अध्ययन किया है।³ वर्तमान पुनरीक्षण याचिकाओं को जन्म देने वाले वर्तमान मुकदमे के प्रासंगिक तथ्यों को संक्षेप में यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है:

/

/

3.1.डी. एम. सी. मैनेजमेंट कंसल्टेंट्स लिमिटेड 2 को जुलाई 1995 में कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत एक सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी के रूप में शामिल किया गया था।डी. एम. सी. और इंटीग्रेटेड सेल्स सर्विस लिमिटेड (प्रतिवादी संख्या 1) के बीच 03.10.2000 से प्रभावी होने के लिए 18.09.2000 पर एक प्रतिनिधित्व समझौता निष्पादित किया गया था। उक्त समझौते पर रतन पाठक (प्रबंध निदेशक) ने हस्ताक्षर किए थे।

/

1 संक्षेप में, "जी. बी. टी. एल". 2 संक्षेप में "डी. एम. सी".

/

728

/

[2023] 10 एस सी आर।

/

डी. एम. सी. की ओर से और प्रत्यर्थी संख्या 1 की ओर से निदेशक टेरी एल. पीट।

3.2.उक्त समझौते अंतर्गत प्रतिवादी संख्या 1 को कमीशन के आधार पर डी. एम. सी. के लिए ग्राहक ढूंढने थे।समझौते की शर्तों अंतर्गत प्रतिनिधि के रूप में प्रतिवादी संख्या 1 को संभावित ग्राहकों को अपनी वस्तुओं और सेवाओं को बेचने में डी. एम. सी. की सहायता करनी थी और उस पर विचार करते हुए कमीशन प्राप्त करना था।इसके अलावा, खंड 8 (डी) के अनुसार, दोनों कंपनियों के बीच कोई भी विवाद मिसौरी राज्य, यू. एस. ए. के कानूनों के अधीन होने के लिए सहमत था और इसे पक्षों के बीच समझौते द्वारा नियुक्त एकमात्र मध्यस्थ को भेजा जाना था।मध्यस्थ से सहमत होने में विफल रहने पर, नियुक्ति अमेरिकन आर्बिट्रेशन एसोसिएशन के नियमों के अनुसार की जानी थी।

/

/

3.3.18.09.2000 दिनांकित प्रतिनिधित्व समझौते के संबंध में दो संशोधन किए गए थे। कमीशन की दर में परिवर्तन से संबंधित पहला संशोधन 2005 में निष्पादित किया गया था।इस

संशोधन पर डी. एम. सी. के निदेशक के रूप में समीक्षा याचिकाकर्ता अरुण देव उपाध्याय और प्रतिवादी संख्या 1 की ओर से टेरी एल. पीट (निदेशक) ने हस्ताक्षर किए थे। 3.4.प्रतिनिधित्व समझौते में दूसरा संशोधन 01.01.2008 पर निष्पादित किया गया।इसने 2005 के पहले संशोधन को अमान्य कर दिया।इस संशोधन ने कमीशन की दर में भी कुछ बदलाव किए और आगे इसने डेलावेयर के कानूनों को प्रतिनिधित्व समझौते पर लागू किया।इस संशोधन पर डी. एम. सी. की ओर से रतन पाठक (प्रबंध निदेशक) और प्रतिवादी संख्या 1 की ओर से टेरी एल. पीट (निदेशक) ने हस्ताक्षर किए।

/

/

/

3.5.समीक्षा याचिकाकर्ता, जो डी. एम. सी. में निदेशक का पद संभाल रहे थे, ने 31.03.2009 पर अपना इस्तीफा दे दिया।22.06.2009 पर, प्रत्यर्थी संख्या 1 ने एएए के वाणिज्यिक मध्यस्थता नियमों के अंतर्गत समीक्षा याचिकाकर्ता को मध्यस्थता की मांग जारी की। दावे का बयान डी. एम. सी. और जी. बी. टी. एल. के खिलाफ भी था जिसमें 48 लाख अमेरिकी डॉलर के हर्जाने की मांग की गई थी।

/

3.6.जी. बी. टी. एल. ने आई. डी. 1 पर इस आशय की अपनी आपत्तियाँ दायर कीं कि मध्यस्थता न्यायाधिकरण के पास इसे मध्यस्थता में एक पक्ष के रूप में शामिल करने का कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है क्योंकि वह समझौते का पक्षकार नहीं था।उसी दिन, समीक्षा याचिकाकर्ता ने 'बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रतिक्रिया' भी दायर की।

/

729

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर. [विक्रम नाथ, जे।] ए.

दावा विवरण में कहा गया है कि वह डी. एम. सी. और प्रत्यर्थी सं. 1. दूसरा, कि उन्होंने कभी भी किसी भी मध्यस्थता समझौते के लिए सहमति नहीं दी या बाध्य होने के लिए सहमति नहीं दी; और तीसरा, उनकी व्यक्तिगत क्षमता में उनके खिलाफ मध्यस्थता की कोई भी मांग स्वीकार्य नहीं थी और उसे अस्वीकार कर दिया गया था।

/

3.7.प्रतिनिधित्व समझौते यानी डी. एम. सी. के हस्ताक्षरकर्ता ने प्रत्यर्थी संख्या 1 द्वारा किए गए दावे के विवरण के लिए 21.07.2009 पर अपना जवाब दाखिल किया।

3.8.अक्टूबर, 2009 में, जी. बी. टी. एल. ने प्रतिवादी संख्या 1 के खिलाफ सिविल न्यायाधीश, वरिष्ठ प्रभाग, नागपुर के समक्ष 2009 का विशेष दीवानी मुकदमा संख्या 1035 दायर किया, जिसमें घोषणा और स्थायी निषेधाज्ञा की मांग की गई और साथ ही 5 लाख रुपये के हर्जाने की वसूली के लिए भी कहा गया। 10,00,000-।यह मुकदमा अभी भी लंबित है।उक्त वाद में आदेश 39 नियम 1 और 2 सी. पी. सी. के अंतर्गत एक आवेदन भी दायर किया गया था जिसमें प्रतिवादी संख्या 1 को इस आधार पर मध्यस्थता के साथ आगे बढ़ने से रोकने का अनुरोध किया गया था कि उसे मध्यस्थता में भाग लेने के लिए विवश नहीं किया जा सकता क्योंकि वह समझौते का हस्ताक्षरकर्ता नहीं था।

/

/

3.9.न्यायाधिकरण ने 23.12.2009 पर एक अंतर्वर्ती आदेश पारित किया जिसमें कहा गया था कि न्यायाधिकरण को यह तय करने का अधिकार क्षेत्र था कि प्रतिनिधित्व समझौते पर हस्ताक्षर न करने वाले का नाम मध्यस्थता में उचित रूप से रखा गया था या नहीं; गैर-हस्ताक्षर करने वाले पक्षों के कॉर्पोरेट पर्दा और जॉइंडर को भेदने का मुद्दा साक्ष्य प्राप्त होने के बाद तय किया जा सकता है और यह एक प्रारंभिक मुद्दा नहीं है; समीक्षा याचिकाकर्ता और जी. बी. टी. एल. के दावों को खतरे में नहीं डाला जाएगा और गैर-हस्ताक्षर करने वाले पक्षों के रूप में उनके दावों के अधिकारों की छूट का गठन नहीं किया जाएगा; कि उन्हें प्रतिवादी संख्या 1 द्वारा किए गए तर्कों और तथ्यात्मक दावों को लड़ना चाहिए; मध्यस्थता में उनकी गैर-भागीदारी संभावित रूप से उन्हें एक प्रतिकूल पुरस्कार या डिफॉल्ट रूप से एक पुरस्कार के लिए उजागर करेगी। समीक्षा याचिकाकर्ता के अनुसार, उपरोक्त आदेश उनकी अनुपस्थिति और जी. बी. टी. एल. में पारित किया गया था।

/

/

3.10.2009 के विशेष दीवानी मुकदमा संख्या 1035 में दायर आदेश 39 नियम 1 और 2 सी. पी. सी. के अंतर्गत आवेदन को सिविल न्यायाधीश, नागपुर द्वारा दिनांक 25.01.2010 के आदेश के माध्यम से खारिज कर दिया गया था।

/

3.11.मध्यस्थ ने 28.03.2010 पर प्रतिवादी संख्या 1 के पक्ष में इस निष्कर्ष के साथ एक पुरस्कार दिया कि डी. एम. सी. उनके प्रतिनिधित्व समझौते का उल्लंघन कर रहा था और आगे यह अभिनिर्धारित किया कि तब से

[2023] 10 एस सी आर।

डी. एम. सी., समीक्षा याचिकाकर्ता और जी. बी. टी. एल. ने मिलकर काम किया, वे संयुक्त रूप से और अलग-अलग रूप से ब्याज के साथ राशि का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी थे। यह पुरस्कार अमेरिकी डॉलर 6,948,100 की राशि के लिए था।

3.12.प्रतिवादी संख्या 1 ने उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाने से पहले मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996 3 की धारा 47 के अंतर्गत एक आवेदन दायर किया जिसमें नागपुर में प्रधान जिला न्यायाधीश के समक्ष मध्यस्थता पुरस्कार के निष्पादन की मांग की गई थी। हालाँकि, उक्त आवेदन को बनाए रखने योग्य नहीं पाया गया क्योंकि यह उच्च न्यायालय था जिसका अधिकार क्षेत्र होगा। बंबई उच्च न्यायालय की नागपुर पीठ के समक्ष पुरस्कार को लागू करने की मांग करने वाला आवेदन 2015 की एम. सी. ए. संख्या 1319 के रूप में दर्ज किया गया था। 27.01.2016 पर समीक्षा याचिकाकर्ता ने अधिनियम की धारा 47 के अंतर्गत आपत्तियां दायर कीं, जिस पर प्रतिवादी संख्या 1 ने 06.02.2016 पर अपना जवाब दाखिल किया। समीक्षा याचिकाकर्ता द्वारा अधिनियम की धारा 44 से 49 के अंतर्गत विदेशी पुरस्कार के रूप में पुरस्कार की मान्यता को चुनौती देते हुए 03.03.2016 पर आपत्तियों का एक दूसरा सेट दायर किया गया था क्योंकि यह अधिनियम के अंतर्गत और न्यूयॉर्क कन्वेंशन के प्रावधानों के अंतर्गत भी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता था। डी. एम. सी. और जी. बी. टी. एल. ने अधिनियम की धारा 49 के अंतर्गत अलग-अलग आपत्तियां दायर कीं, जिनके जवाब प्रतिवादी संख्या 1 द्वारा दायर किए गए थे।

3.13.विद्वान एकल न्यायाधीश ने दिनांकित 18.04.2016 के निर्णय के माध्यम से माना कि यह पुरस्कार एक विदेशी पुरस्कार था और केवल डी. एम. सी. के खिलाफ लागू करने योग्य था। इसने समीक्षा याचिकाकर्ता और जी. बी. टी. एल. द्वारा उठाई गई आपत्तियों को स्वीकार कर लिया कि पुरस्कार उनके खिलाफ प्रवर्तनीय नहीं था। प्रत्यर्थी संख्या 1 द्वारा पसंद की गई लेटर्स पेटेंट अपील 2016 की मध्यस्थता अपील संख्या 3 के रूप में पंजीकृत थी। इस बीच, अपील की स्थिरता के बारे में आपत्तियां उठाई गईं और एकल न्यायाधीश के समक्ष समीक्षा याचिकाएं भी दायर की गईं।

/

/

3.14.डिवीजन बेंच ने उस विचारणीयता के बारे में आपत्ति को खारिज कर दिया जिसके खिलाफ मामले को समीक्षा याचिकाकर्ता द्वारा इस न्यायालय में ले जाया गया था, लेकिन इसे 30.09.2016 पर खारिज कर दिया गया था। डिवीजन बेंच ने अंततः 2016 की मध्यस्थता अपील संख्या 3 को अनुज्ञात और निर्णय को समीक्षा याचिकाकर्ता और जी. बी. टी. एल. के खिलाफ भी लागू करने योग्य माना क्योंकि यह पुरस्कार समीक्षा याचिकाकर्ता और जी. बी. टी. एल. के खिलाफ एक विदेशी पुरस्कार था। डिवीजन बेंच के समक्ष समीक्षा याचिकाएं दायर की गईं जिन्हें 24.02.2017 पर खारिज कर दिया गया।

/

/

3 संक्षेप में 'द एक्ट' ए

731

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर. [विक्रम नाथ, जे।] ए.

3.15.2017 के एस. एल. पी. (सिविल) संख्या 8899-8900 (2018 की सिविल अपील Nos.8345-8346) के माध्यम से समीक्षा याचिकाकर्ता द्वारा इस न्यायालय के समक्ष दिनांकित 04.01.2017 और 24.02.2017 आदेशों को चुनौती दी गई थी। जी. बी. टी. एल. और डी. एम. सी. ने भी इस न्यायालय के समक्ष अलग-अलग एस. एल. पी. दायर की। डी. एम. सी. द्वारा दायर एस. एल. पी. में, इस न्यायालय ने 25 लाख अमेरिकी डॉलर जमा करने की शर्त के साथ अनुमति प्रदान की। इस न्यायालय ने 10.08.2021 दिनांकित निर्णय के माध्यम से सभी अपीलों को खारिज कर दिया। वर्तमान समीक्षा याचिकाओं को केवल अरुण देव उपाध्याय (समीक्षा याचिकाकर्ता) द्वारा दिनांकित 10.08.2021 के फैसले की समीक्षा के लिए प्राथमिकता दी गई है।

/

4. आक्षेपित निर्णय में यह अभिनिर्धारित किया गया है कि मध्यस्थता के अस्तित्व और वैधता के आधार पर भी योग्यता के आधार पर पुरस्कार की समीक्षा करने की अनुमति नहीं होगी और एकमात्र आधार जिस पर विदेशी पुरस्कारों के प्रवर्तन का विरोध किया जा सकता है या अस्वीकार किया जा सकता है, अधिनियम की धारा 48 में निहित है। इसने यह भी माना कि अधिनियम की धारा 46 का कैनवास अधिनियम की धारा 35 की तुलना में व्यापक है और इस तरह उन सभी व्यक्तियों पर लागू होगा जो मध्यस्थता समझौते के पक्ष भी नहीं हैं। इसने यह भी

माना कि यातनापूर्ण विवाद को मध्यस्थता के लिए भी भेजा जा सकता है क्योंकि यह समझौते के संबंध में है।

/

/

5. श्री साल्वे ने प्रस्तुत किया कि इस न्यायालय के समक्ष पुनरीक्षण याचिकाकर्ता की ओर से की गई प्रस्तुतियों में आवश्यक बिंदुओं पर विचार नहीं किया गया है और न ही इस न्यायालय द्वारा वापस किए गए किसी निष्कर्ष पर विचार किया गया है क्योंकि आक्षेपित आदेश रिकॉर्ड के सामने स्पष्ट त्रुटि से ग्रस्त है। 6. श्री साल्वे की प्रस्तुतियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं: (ए) आक्षेपित निर्णय ने समीक्षा याचिकाकर्ता की ओर से दिए गए मौलिक बिंदु की अनदेखी की कि अधिनियम की धारा 46 के साथ पठित धारा 44 केवल एक विदेशी पुरस्कार को लागू करने योग्य बनाती है और यह पता लगाने के लिए कि क्या पुरस्कार विदेशी पुरस्कार है, न्यायालय अधिनियम की धारा 48 द्वारा बाधित नहीं है।

/

/

बी) निर्विवाद रूप से, समीक्षा याचिकाकर्ता प्रतिनिधित्व समझौते का एक पक्ष नहीं था, हालांकि, डेलावेयर विधि और इसके सिद्धांतों को लागू करने वाले मध्यस्थ ने समीक्षा याचिकाकर्ता को डीएमसी के खिलाफ प्रतिवादी संख्या 1 द्वारा शुरू की गई मध्यस्थता कार्यवाही का एक पक्ष बनाया। उक्त पुरस्कार को भारत में लागू करने की मांग की गई थी और उक्त प्रवर्तन कार्यवाही में, समीक्षा याचिकाकर्ता द्वारा आपत्तियां उठाई गई थीं, जिन पर आक्षेपित आदेश में विचार नहीं किया गया है।

/

/

732

/

[2023] 10 एस सी आर।

ग) इस न्यायालय के समक्ष तर्क के समय विशेष रूप से उठाए गए विवाद पर विचार नहीं किया गया और वास्तव में गलत अर्थ लगाया गया या गलत समझा गया जिसके परिणामस्वरूप रिकॉर्ड पर स्पष्ट त्रुटि हो गई। इस न्यायालय के समक्ष बहस के समय समीक्षा याचिकाकर्ता की ओर से प्रस्तुत लिखित प्रस्तुतियों का संदर्भ दिया गया है जिसमें विशेष रूप से निम्नलिखित बिंदु शामिल थे:

/

(i) हालांकि डेलावेयर विधि के अंतर्गत, समझौते के एक गैर-पक्ष को मध्यस्थता कार्यवाही में शामिल किया जा सकता था, लेकिन जब इसे भारत में लागू किया जा रहा है, तो पुरस्कार का परीक्षण करना होगा कि क्या इसे भारतीय विधि के अनुसार समझौते के गैर-पक्ष के खिलाफ लागू किया जा सकता है। निवेदन यह है कि समीक्षा याचिकाकर्ता के खिलाफ कोई विदेशी पुरस्कार नहीं था जिसे भारत में लागू किया जा सके। अधिनियम की धारा 35 और धारा 46 की भाषा समान नहीं है। धारा 35 अंतर्गत एक मध्यस्थता पुरस्कार क्रमशः अंतिम और पक्षकारों और उनके अंतर्गत दावा करने वाले व्यक्तियों के लिए बाध्यकारी होगा, जिसका अर्थ है कि समझौते के पक्षकार के अंतर्गत दावा करने वाले गैर-पक्षकार के लिए मध्यस्थता पुरस्कार बाध्यकारी होगा, जबकि अधिनियम की धारा 46 के अंतर्गत एक विदेशी पुरस्कार उन व्यक्तियों पर सभी उद्देश्यों के लिए बाध्यकारी होगा जिनके बीच यह किया गया था और गैर-पक्षकार के खिलाफ नहीं, भले ही समझौते के पक्षकार के अंतर्गत दावा किया गया हो। अधिनियम की धारा 35 और 46 नीचे पुनः प्रस्तुत की गई हैं:

/

/

/

“35. मध्यस्थता पुरस्कारों को अंतिम रूप देना।- इस भाग के अधीन

/

एक मध्यस्थ पुरस्कार क्रमशः अंतिम और पक्षकारों और उन अंतर्गत दावा करने वाले व्यक्तियों के लिए बाध्यकारी होगा।

46. जब विदेशी पुरस्कार बाध्यकारी हो।- कोई भी विदेशी पुरस्कार

जो इस अध्याय के अंतर्गत प्रवर्तनीय होगा, वह उन व्यक्तियों पर सभी उद्देश्यों के लिए बाध्यकारी माना जाएगा जिनके बीच यह किया गया था, और तदनुसार उन व्यक्तियों में से कोई भी भारत में किसी भी कानूनी कार्यवाही में बचाव के रूप में, बंद या अन्यथा भरोसा कर सकता है और विदेशी पुरस्कार को लागू करने के लिए इस अध्याय में किसी भी संदर्भ का अर्थ इस प्रकार किया जाएगा कि इसमें किसी पुरस्कार पर भरोसा करने के संदर्भ शामिल हैं। ”

/

/

/

((ii) आक्षेपित निर्णय में मामले के इस पहलू पर विचार नहीं किया गया है, हालांकि यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा था और मामले की जड़ तक जाता है कि क्या एक विदेशी पुरस्कार को समझौते के गैर-पक्ष के खिलाफ बाध्यकारी और प्रवर्तनीय माना जा सकता है।

(डी) अंत में, समीक्षा याचिकाकर्ता के अनुसार, नुकसान की गणना किसी भी मात्रात्मक तरीके से नहीं की गई थी, बल्कि केवल श्री पीट की व्यवसाय की अंतरंग समझ के आधार पर की गई थी, जो किसी भी दस्तावेजी सामग्री द्वारा समर्थित नहीं थी।

/

7. दूसरी ओर, प्रत्यर्थी संख्या 1 की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ वकील श्री नाफडे ने विभिन्न निष्कर्षों का उल्लेख करते हुए आक्षेपित निर्णय को सही ठहराने की कोशिश की। उन्होंने यह भी प्रस्तुत किया कि यह एक समीक्षा याचिका होने के कारण, इस न्यायालय के लिए याचिकाकर्ता की दलीलों की जांच करने की सीमित गुंजाइश थी क्योंकि वे अपील की नई सुनवाई के समान होंगे। इसके अलावा, उनके अनुसार, अब जिन सभी बिंदुओं पर बहस करने की मांग की गई है, उन पर इस न्यायालय द्वारा पहले ही विचार किया जा चुका है, समीक्षा के लिए कोई मामला नहीं बनाया गया है और समीक्षा याचिकाएं खारिज किए जाने के योग्य हैं।

/

/

8. पुनरीक्षण याचिकाओं के गुण-दोष पर बहस करने के लिए आगे बढ़ने से पहले, पुनरीक्षण के दायरे पर संक्षेप में टिप्पणी करना उचित होगा।

8.1. समीक्षा याचिकाएं सर्वोच्च न्यायालय नियम, 2013 के आदेश XLVII के नियम 1 के साथ पठित भारत के संविधान के अनुच्छेद 137 के अंतर्गत दायर की गई हैं। भारत के संविधान के अनुच्छेद 137 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्णयों या आदेशों की समीक्षा का प्रावधान है। उसी को नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

/

“137. उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्णयों या आदेशों की समीक्षा।— संसद द्वारा बनाए गए किसी विधि या अनुच्छेद 145 के अंतर्गत बनाए गए किसी भी नियम के प्रावधानों के अधीन, सर्वोच्च न्यायालय को अपने द्वारा घोषित किसी भी निर्णय या आदेश की समीक्षा करने की शक्ति होगी।”

/

8.2. उक्त प्रावधान के अनुसार, सर्वोच्च न्यायालय के पास संसद द्वारा बनाए गए किसी भी विधि या अनुच्छेद 145 के अंतर्गत बनाए गए किसी भी नियम के प्रावधानों के अधीन अपने द्वारा

दिए गए किसी भी निर्णय या आदेश की समीक्षा करने की शक्ति होगी। उच्चतम न्यायालय नियम 2013 को इस न्यायालय द्वारा अनुच्छेद 145 के अंतर्गत विरचित किया गया है और राष्ट्रपति द्वारा विधिवत अनुमोदित किया गया है। यह कहा जा सकता है कि कोई विधि नहीं बनाया गया है

/

/

734

/

[2023] 10 एस सी आर।

उस संबंध में संसद और इस न्यायालय में निहित समीक्षा की शक्ति नियमों द्वारा शासित होगी।

8.3. उच्चतम न्यायालय नियम, 2013 के भाग-IV के आदेश XLVII में समीक्षा की शक्तियों और ऐसी समीक्षा की सुनवाई के लिए प्रक्रिया का प्रावधान है। उक्त प्रावधान को नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

/

“भाग-IV

आदेश XLVII समीक्षा

1. न्यायालय अपने निर्णय या आदेश की समीक्षा कर सकता है, लेकिन पुनरीक्षण के लिए किसी भी आवेदन पर सिविल कार्यवाही में विचार नहीं किया जाएगा, सिवाय आदेश XLVII, संहिता के नियम I में उल्लिखित आधार के, और आपराधिक कार्यवाही में, सिवाय अभिलेख के सामने स्पष्ट त्रुटि के आधार के।

/

समीक्षा के लिए आवेदन के साथ रिकॉर्ड पर अधिवक्ता का एक प्रमाण पत्र होगा जो यह प्रमाणित करता है कि यह समीक्षा के लिए पहला आवेदन है और नियमों के अंतर्गत स्वीकार्य आधारों पर आधारित है।

/

2. पुनरीक्षण के लिए आवेदन एक याचिका द्वारा किया जाएगा, और पुनरीक्षण के लिए मांगे गए निर्णय या आदेश की तारीख से तीस दिनों के भीतर दायर किया जाएगा। यह स्पष्ट रूप से समीक्षा के लिए आधार निर्धारित करेगा।

/

3. जब तक न्यायालय द्वारा अन्यथा आदेश नहीं दिया जाता है, समीक्षा के लिए एक आवेदन का बिना किसी मौखिक तर्क के परिसंचरण द्वारा निपटान किया जाएगा, लेकिन याचिकाकर्ता अतिरिक्त लिखित तर्कों द्वारा अपनी याचिका का पूरक हो सकता है। न्यायालय या तो याचिका को खारिज कर सकता है या विरोधी पक्ष को सीधे नोटिस दे सकता है। जहां तक संभव हो, पुनरीक्षण के लिए आवेदन उसी न्यायाधीश या न्यायाधीशों की पीठ को भेजा जाएगा जिसने पुनरीक्षण के लिए वांछित निर्णय या आदेश दिया था।

/

4. जहां पुनरीक्षण के लिए किसी आवेदन पर न्यायालय विधि या तथ्य की गलती के आधार पर मामले में अपने पूर्व निर्णय को उलट देता है या संशोधित करता है, वहां न्यायालय, यदि वह न्याय के हित में ऐसा करना उचित समझता है, तो न्यायालय के याचिकाकर्ता को आवेदन पर पूरे या आंशिक रूप से भुगतान की गई फीस, जो वह उचित समझे, वापस करने का निर्देश दे सकता है।

/

/

735

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर. [विक्रम नाथ, जे।] ए.

/

5. जहाँ किसी निर्णय और आदेश की समीक्षा के लिए आवेदन किया गया है और उसका निपटारा किया गया है, वहाँ उसी मामले में समीक्षा के लिए आगे कोई आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। "

उपरोक्त प्रावधान के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि सिविल कार्यवाही में सी. पी. सी. के आदेश एक्स. एल. वी. आई. आई. नियम 1 में उल्लिखित आधारों के अलावा समीक्षा पर विचार नहीं किया जा सकता है।

/

8.4. सी. पी. सी. की धारा 114 अदालतों में समीक्षा की शक्ति निहित करती है और आदेश XLVII नियम 1 सी. पी. सी. समीक्षा याचिका दायर करने के लिए गुंजाइश और प्रक्रिया प्रदान करता है। उसी को नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

“ आदेश XLVII नियम 1 CPC: “1. निर्णय की समीक्षा के लिए आवेदन-कोई भी व्यक्ति

/

खुद को दुखी समझते हुए -

(क) एक डिक्री या आदेश द्वारा जिससे अपील की अनुज्ञात है, लेकिन जिससे कोई अपील नहीं की गई है।

/

(बी) एक डिक्री या आदेश द्वारा जिससे कोई अपील की अनुज्ञात नहीं है, या (सी) लघु कारणों के न्यायालय से एक संदर्भ पर निर्णय द्वारा,

और जो नए और महत्वपूर्ण मामले या साक्ष्य की खोज से, जो उचित परिश्रम के अभ्यास के बाद उसके ज्ञान में नहीं था या उस समय उसके द्वारा प्रस्तुत नहीं किया जा सका जब डिक्री पारित की गई थी या आदेश दिया गया था, या किसी गलती या त्रुटि के कारण रिकॉर्ड के सामने या किसी अन्य पर्याप्त कारण से, समीक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखता है।

/

उसके विरुद्ध पारित डिक्री या आदेश की समीक्षा के लिए उस न्यायालय को आवेदन किया जा सकता है जिसने डिक्री पारित की या आदेश दिया।(जोर दिया गया)

/

(2) एक पक्ष जो किसी डिक्री या आदेश से अपील नहीं कर रहा है, वह किसी अन्य पक्ष द्वारा अपील के लंबित होने के बावजूद निर्णय की समीक्षा के लिए आवेदन कर सकता है, सिवाय इसके कि जहां ऐसी अपील का आधार आवेदक और अपीलार्थी के लिए समान है, या जब, प्रतिवादी होने के नाते, वह अपील न्यायालय में वह मामला पेश कर सकता है जिस पर उसने समीक्षा के लिए आवेदन किया था।

/

स्पष्टीकरण .यह तथ्य कि विधि के किसी प्रश्न पर निर्णय , जिस पर न्यायालय का निर्णय आधारित है, किसी अन्य मामले में उच्च न्यायालय के बाद के निर्णय द्वारा उलट दिया गया है या संशोधित किया गया है, ऐसे निर्णय की समीक्षा के लिए आधार नहीं होगा। "

/

736

/

[2023] 10 एस सी आर।

9. उपरोक्त प्रावधानों को अनिश्चित शब्दों में पढ़ने से पता चलता है कि समीक्षा करने की शक्ति का प्रयोग केवल उसमें व्यक्त की गई तीन शर्तों में से किसी एक के अस्तित्व पर किया जा सकता है। 'रिकॉर्ड के सामने एक गलती या एक स्पष्ट त्रुटि शर्तों में से एक है। केवल इसी आधार पर समीक्षा को प्राथमिकता दी गई है। उपरोक्त वाक्यांश की व्याख्या दशकों से इस न्यायालय के आधिकारिक निर्णय द्वारा लगातार की गई है। इस न्यायालय की तीन न्यायाधीशों की पीठ जिसमें माननीय श्री एस. आर. दास, सी. जे., एम. हिदायतुल्ला और श्री के. सी. दास गुप्ता, जे. जे. शामिल हैं।

/

सत्यनारायन लक्ष्मीनारायण हेगड़े और अन्य बनाम मिलिकारजुन भवनप्पा तिरुमाले 4 के मामले में वाक्यांश के दायरे पर चर्चा की गई।

'रिकॉर्ड के चेहरे पर स्पष्ट त्रुटि'। उक्त मामले में इस न्यायालय के समक्ष चुनौती इस आधार पर उच्च न्यायालय का निर्णय था कि क्या यह रिकॉर्ड के सामने स्पष्ट त्रुटि से ग्रस्त है। उच्च न्यायालय ने प्रमाणपत्र का एक रिट जारी किया था और न्यायाधिकरण के आदेश को रद्द कर दिया था और मामलातदार के आदेश को बहाल कर दिया था। रिपोर्ट के पैराग्राफ 8 में, जिस मुद्दे पर विचार किया जाना था, वह परिलक्षित होता है। उसी को नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

/

/

"8. इस अदालत द्वारा दी गई विशेष अनुमति द्वारा इस अपील में हमारे विचार के लिए जो मुख्य प्रश्न उत्पन्न होता है, वह यह है कि क्या अभिलेख के सामने कोई त्रुटि स्पष्ट है ताकि उच्च न्यायालय अभिलेख के लिए कॉल कर सके और प्रमाणपत्र के रिट द्वारा आदेश को रद्द कर सके या क्या त्रुटि, यदि कोई हो, तो "केवल एक त्रुटि थी जो अभिलेख के सामने इतनी स्पष्ट नहीं थी", जिसे केवल अपील द्वारा ठीक किया जा सकता है यदि कोई अपील बिल्कुल भी है।"

/

10. अभिलेख पर प्रासंगिक सामग्री पर चर्चा करने के बाद, निष्कर्ष रिपोर्ट के पैराग्राफ 17 में बताया गया है। विचार यह था कि जहां एक त्रुटि जिसे उन बिंदुओं पर तर्क की एक लंबी प्रक्रिया द्वारा स्थापित किया जाना है जहां दो राय हो सकती हैं, शायद ही रिकॉर्ड के चेहरे पर एक स्पष्ट त्रुटि कहा जा सकता है। यह विचार कि समीक्षा अधिकार क्षेत्र में आदेश पर हमला करने वाले किसी बिंदु का प्रचार करने के लिए तर्कों की लंबी प्रक्रिया को रिकॉर्ड के सामने एक स्पष्ट त्रुटि नहीं कहा जा सकता है। रिपोर्ट के पैराग्राफ 17 से प्रासंगिक उद्धरण यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है:

/

/

“17.....क्या निष्कर्ष गलत है और यदि ऐसा है, तो क्या रिकॉर्ड के सामने ऐसी त्रुटि स्पष्ट है? अगर यह स्पष्ट है कि

/

4 ए. आई. आर 1960 एस. सी. 137 ए

737

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर. [विक्रम नाथ, जे।] ए.

यदि अभिलेख पर कोई त्रुटि स्पष्ट नहीं है, तो हमारे लिए यह तय करना आवश्यक नहीं है कि नोटिस के प्रश्न पर बॉम्बे उच्च न्यायालय का निष्कर्ष सही है या नहीं। एक त्रुटि जिसे उन बिंदुओं पर तर्क की एक लंबी प्रक्रिया द्वारा स्थापित किया जाना है जहां दो राय हो सकती हैं, शायद ही रिकॉर्ड के सामने एक स्पष्ट त्रुटि कहा जा सकता है। जैसा कि प्रतिद्वंद्वी दलीलों की उपरोक्त चर्चा से पता चलता है कि वर्तमान मामले में कथित त्रुटि स्पष्ट नहीं है और यदि इसे स्थापित किया जा सकता है, तो इसे लंबे और जटिल तर्कों द्वारा स्थापित किया जाना चाहिए। हमें नहीं लगता कि इस तरह की त्रुटि को इस तरह की रिट जारी करने के लिए उच्च न्यायालय की शक्तियों को नियंत्रित करने वाले नियम के अनुसार प्रमाणपत्र के रिट द्वारा ठीक किया जा सकता है। हमारी राय में उच्च न्यायालय का यह सोचना गलत था कि बॉम्बे रेवेन्यू ट्रिब्यूनल के निर्णय में कथित त्रुटि है, कि कब्जा करने का आदेश तब तक नहीं दिया जाना चाहिए जब तक कि पूर्व सूचना नहीं दी गई थी, जो अभिलेख के सामने एक स्पष्ट त्रुटि थी ताकि प्रमाण पत्र के एक रिट द्वारा ठीक किया जा सके। "

/

/

/

11. एक अन्य मामला जिस पर संक्षिप्त रूप से विचार किया जा सकता है, वह है पैरीसन देवी बनाम सुमितरी देवी 5 का मामला, जहां इस न्यायालय ने फैसला सुनाया कि आदेश XLVII नियम 1 सी. पी. सी. के अंतर्गत, एक निर्णय अन्य बातों के साथ-साथ समीक्षा के लिए खुला हो सकता है यदि रिकॉर्ड के सामने कोई गलती या त्रुटि स्पष्ट है। एक त्रुटि जो स्वयं स्पष्ट नहीं है और जिसे तर्क की प्रक्रिया द्वारा पता लगाया जाना है, उसे शायद ही रिकॉर्ड के सामने एक स्पष्ट त्रुटि कहा जा सकता है जो न्यायालय को अपनी समीक्षा की शक्ति का प्रयोग करने के लिए उचित ठहराती है। इस अनुज्ञात यह भी कहा कि एक समीक्षा याचिका को छद्म रूप में अपील के रूप में नहीं माना जा सकता है।

/

/

12. निर्णयों की एक श्रृंखला का भी उल्लेख किया जा सकता है जिसमें यह अभिनिर्धारित किया गया है कि समीक्षा करने की शक्ति का प्रयोग इस आधार पर नहीं किया जा सकता है कि निर्णय गुण-दोष के आधार पर गलत था क्योंकि यह अपील न्यायालय का अधिकार क्षेत्र होगा। समीक्षा की शक्ति को अपीलीय शक्तियों के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि अपीलीय शक्ति अधीनस्थ न्यायालयों द्वारा की गई त्रुटियों के सभी तरीकों को ठीक कर सकती है। निम्नलिखित निर्णयों का उल्लेख किया जा सकता है:

/

(1) शिवदेव सिंह बनाम पंजाब राज्य; ए. आई. आर 1963 एस. सी. 1909

/

5 (1997) 8 एस. सी. सी. 715

738 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 10 एस. सी. आर.

(2) अरिबम तुलेश्वर शर्मा बनाम अरिबम पिशक शर्मा; ए. आई. आर. 1979 एस. सी. 1047

(3) मीरा भान्जा (श्रीमती) बनाम निर्मला कुमारी चौधरी (श्रीमती.); (1995) 1 एससीसी 170।

(4) उमा नाथ पांडे बनाम उत्तर प्रदेश राज्य ; (2009) 12 एससीसी 40

/

13. हाल ही में, इस न्यायालय ने 24 फरवरी, 2023 के एक निर्णय में

एस. मुरली सुंदरम बनाम ज्योतिबाई कन्नन और अन्य के बीच 2023 की सिविल अपील No.1167-1170 में पारित किया गया, जिसमें कहा गया कि

यद्यपि समीक्षा किए जाने की मांग किया गया निर्णय गलत है, लेकिन यह आदेश XLVII नियम 1 के अंतर्गत शक्तियों के प्रयोग में समीक्षा करने का आधार नहीं हो सकता है।

/

सीपीसी। इसके अलावा, पेरी कंसाग्रा बनाम स्मृति मदान के मामले में।

कंसाग्रा 6, इस न्यायालय ने कहा कि धारा 114 सी. पी. सी. के साथ पठित आदेश एक्स. एल. वी. आई. आई. नियम 1 के अंतर्गत एक आवेदन में समीक्षा अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करते हुए, समीक्षा न्यायालय अपने स्वयं के आदेश पर अपील में नहीं बैठता है।

/

14. शांति कंडक्टर (पी) लिमिटेड के बीच एक अन्य मामले में। बनाम।

असम एस. ई. बी., 7 इस न्यायालय ने कहा कि धारा 114 सी. पी. सी. के साथ पठित आदेश एक्स. एल. वी. आई. आई. नियम 1 के अंतर्गत समीक्षा का दायरा सीमित है और समीक्षा की आड़ में, याचिकाकर्ता को उन प्रश्नों को पुनः प्रस्तुत करने और पुनः बहस करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है जिन्हें पहले ही संबोधित और तय किया जा चुका है। यह आगे देखा गया कि एक त्रुटि जो स्वयं स्पष्ट नहीं है और जिसे तर्क की प्रक्रिया द्वारा पता लगाया जाना है, शायद ही रिकॉर्ड के सामने एक स्पष्ट त्रुटि कहा जा सकता है।

/

15. उपरोक्त से, यह स्पष्ट है कि समीक्षा करने की शक्ति का उपयोग अपीलीय शक्ति के रूप में नहीं किया जा सकता है और इसे आदेश XLVII नियम 1 सी. पी. सी. के दायरे और दायरे तक ही सीमित रखना होगा। रिकॉर्ड के सामने एक त्रुटि ऐसी त्रुटि होनी चाहिए जो केवल रिकॉर्ड को देखने से प्रभावित हो और इसके लिए उन बिंदुओं पर तर्क की किसी भी लंबी प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए जहां दो राय हो सकती हैं।

/

16. समीक्षा के दायरे की उपरोक्त पृष्ठभूमि में, जिसमें ये याचिकाएं सीमित हैं, हम इस बात पर विचार करने के लिए आगे बढ़ते हैं कि समीक्षा के लिए कोई मामला बनाया गया है या नहीं।

/

17. समीक्षा याचिकाओं में 18 आधार उठाए गए हैं, हमने न केवल श्री साल्वे द्वारा दी गई मौखिक दलीलों पर विचार किया है।

6 (2019) 20 एससीसी 753 7 (2020) 2 एससीसी 677 ए

/

739

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर. [विक्रम नाथ, जे।] ए.

विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता, लेकिन समीक्षा याचिका में उठाए गए सभी आधारों पर भी विचार किया है। आई. डी. 1 दिनांकित निर्णय का बारीकी से अवलोकन दर्शाता है कि समीक्षा में लिए गए सभी आधारों पर विस्तार से चर्चा की गई है और समीक्षा याचिकाकर्ता के दावे को स्वीकार नहीं करते हुए निष्कर्ष वापस किए गए हैं। जिस बात का तर्क दिया जाना चाहिए वह मूल रूप से यह है कि लिया गया दृष्टिकोण गलत है और इसलिए, आक्षेपित निर्णय की समीक्षा की जानी चाहिए।

/

18. हम संक्षेप में प्रासंगिक तर्क और इस न्यायालय द्वारा दिनांकित 10.08.2021 के आक्षेपित निर्णय में वापस किए गए निष्कर्षों का उल्लेख कर सकते हैं। आक्षेपित निर्णय के पैराग्राफ 26 में, इस न्यायालय ने श्री साल्वे द्वारा तर्क दिए गए चार बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया। उक्त अनुच्छेद यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है:

“26. अरुण देव उपाध्याय की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरीश साल्वे ने तर्क दिया कि

/

एक अपकृत्य का आयोग मध्यस्थता समझौते के अंतर्गत उत्पन्न होने वाले संविदात्मक विवादों से बाहर होगा और चूंकि कार्रवाई का कारण वास्तव में अपकृत्य में उत्पन्न हुआ था, इसलिए पुरस्कार को दूषित कर दिया गया था

इस मैदान को। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि पाकिस्तान सरकार के धार्मिक मामलों के मंत्रालय **[2010] 3 डब्ल्यू. एल. आर. 1472 ["डल्ला"]** के खिलाफ डल्ला रियल एस्टेट और पर्यटन कंपनी पर बहुत अधिक भरोसा किया जाता है कि

/

मौखिक और/या दस्तावेजी साक्ष्य के आधार पर एक पूर्ण समीक्षा की जानी चाहिए थी जो इस मामले के तथ्यों पर नहीं की गई थी, डिवीजन बेंच ने केवल मध्यस्थ के निष्कर्षों को प्रतिध्वनित किया। इसके बाद उन्होंने मध्यस्थता अधिनियम की धारा **46** और धारा **35** के बीच अंतर किया और तर्क दिया कि धारा **46** के अंतर्गत, एक विदेशी पुरस्कार को केवल उन व्यक्तियों पर बाध्यकारी माना जाना चाहिए जिनके बीच यह किया गया था, न कि उन व्यक्तियों पर जो **25** पक्षों के अंतर्गत दावा कर सकते हैं। वह भी।

/

तर्क दिया कि जहाँ तक उनके मुवक्किल का संबंध है, वहाँ नहीं था

/

किसी भी तरह से उसकी संलिप्तता दिखाने के लिए सबूत और यह कि उसके मुवक्किल के खिलाफ निष्कर्ष अनुचित और अनुचित हैं, और इस आधार पर भी पुरस्कार दूषित है। ”

(जोर दिया गया)

19. निर्णय का अनुच्छेद 29 8 अधिनियम की धारा 44 के विश्लेषण और व्याख्या से संबंधित है। इस न्यायालय ने देखा कि मध्यस्थता पुरस्कार को विदेशी पुरस्कार के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए छह तत्व होंगे। पैराग्राफ 29 यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है:

/

8 पैराग्राफ एन. ओ. एस. पेपर बुक में संलग्न मूल आक्षेपित निर्णय से हैं।

“29. मध्यस्थता और सुलह अधिनियम, 1996 की धारा 44 को पढ़ने से पता चलेगा कि उक्त धारा के अंतर्गत एक पुरस्कार के विदेशी पुरस्कार होने के छह तत्व हैं। सबसे पहले, यह कानूनी संबंधों से उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों के बीच मतभेदों पर एक मध्यस्थ पुरस्कार होना चाहिए। दूसरा, ये अंतर अनुबंध में या अनुबंध के बाहर हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, अपकृत्य में। तीसरा, इस प्रकार बताए गए विधि ी संबंध को भारत में विधि के अंतर्गत "वाणिज्यिक" माना जाना चाहिए। चौथा, पुरस्कार 11 अक्टूबर, 1960 को या उसके बाद दिया जाना चाहिए। पाँचवाँ, पुरस्कार न्यूयॉर्क कन्वेंशन पुरस्कार होना चाहिए-संक्षेप में यह लिखित समझौते के अनुसरण में होना चाहिए जिस पर न्यूयॉर्क कन्वेंशन लागू होता है और ऐसे क्षेत्रों में से एक में होना चाहिए। और छठा, यह ऐसे क्षेत्रों में से एक में बनाया जाना चाहिए जिसे केंद्र सरकार अधिसूचना द्वारा उन क्षेत्रों के रूप में घोषित करती है जिन पर न्यूयॉर्क कन्वेंशन लागू होता है। ”

/

/

20. पैराग्राफ Nos.30 से 33 में, इस न्यायालय ने सामग्री पर चर्चा की। इसके अलावा, पैराग्राफ 34 से 37 में, न्यायालय ने अधिनियम की धारा 47 के दायरे पर विचार किया और समीक्षा याचिकाकर्ता के वकील के इस तर्क को खारिज कर दिया कि साक्ष्य प्रस्तुत किया जाना चाहिए और यह साबित करने के लिए एक पूर्ण परीक्षण होना चाहिए कि गैर-हस्ताक्षरकर्ता भी एक विदेशी पुरस्कार से बंधा होगा। 21. पैराग्राफ <आईडी1 से 57 में, इस न्यायालय ने इस तर्क पर विस्तार से विचार किया कि पुरस्कार के गुण-दोष पर समीक्षा अधिनियम की धारा 48 (1) के अंतर्गत अनुज्ञेय होगी और समीक्षा याचिकाकर्ता के खिलाफ अभिनिर्धारित किया क्योंकि उसमें से कोई भी आधार समीक्षा याचिकाकर्ता के लिए उपलब्ध नहीं था।

/

/

22. रिपोर्ट के पैराग्राफ <ID1 से 70 में, इस न्यायालय ने इस तर्क पर विचार किया कि अपकृत्य में दिए गए नुकसान मध्यस्थता समझौते के दायरे से बाहर होंगे और उक्त तर्क को खारिज कर दिया।

/

23. निर्णय की रिपोर्ट के पैराग्राफ 71 में, इस न्यायालय ने अधिनियम की धारा 35 और 46 के दायरे की तुलना की और आगे कहा कि एक बार पुरस्कार को उस राज्य में चुनौती नहीं दी

गई थी जहां इसे बनाया गया था, यह नहीं कहा जा सकता है कि मध्यस्थता पुरस्कार ने समझौते के मूल विधि का उल्लंघन किया था।

/

24. रिपोर्ट के पैराग्राफ 72 और 73 में किसी भी सार्वजनिक नीति के उल्लंघन के मुद्दे पर चर्चा की गई और इस न्यायालय ने पाया कि ऐसा कोई उल्लंघन नहीं था।

/

741

अरुण देव उपाध्याय बनाम एकीकृत बिक्री सेवा लिमिटेड और ए. एन. आर. [विक्रम नाथ, जे।]

/

25. पैराग्राफ 74 से 76 में, इस न्यायालय ने नुकसान की मात्रा और उसे निर्धारित करने के आधार को उचित ठहराया, भले ही वह सर्वोत्तम निर्णय मूल्यांकन पर आधारित हो।

26. इस न्यायालय द्वारा अपने दिनांकित निर्णय में प्रत्येक तर्क पर विचार किए जाने के बाद, यदि आगे दी गई दलीलों को स्वीकार कर लिया जाता है, तो उनके परिणामस्वरूप उठाए गए और तय किए गए बिंदुओं पर एक अलग राय व्यक्त की जाएगी, जो हमें डर है कि रिकॉर्ड के सामने स्पष्ट त्रुटि से संबंधित आदेश XLVII नियम 1 सी. पी. सी. के तय किए गए रूपों के भीतर नहीं आते हैं। समीक्षा शक्ति का उपयोग करने के अन्य आधार न तो मौजूद हैं और न ही वर्तमान याचिकाओं में उठाए गए हैं।

/

27. तदनुसार, हम समीक्षा याचिकाओं को अनुमति देने के लिए कोई अच्छा आधार नहीं पाते हैं। तदनुसार, उन्हें बर्खास्त कर दिया जाता है।

/

दिव्या पांडे

पुनरीक्षण याचिकाएँ खारिज कर दी गईं।

(सहायक: रूपांशी विरंग, एलसीआरए)

/

/

/

/

